दरियाई घोड़ों के बाल क्यों नहीं होते

Basilio Gimo, David Ker
Carol Liddiment
Nandani
Hindi
Level 2

(imageless edition)

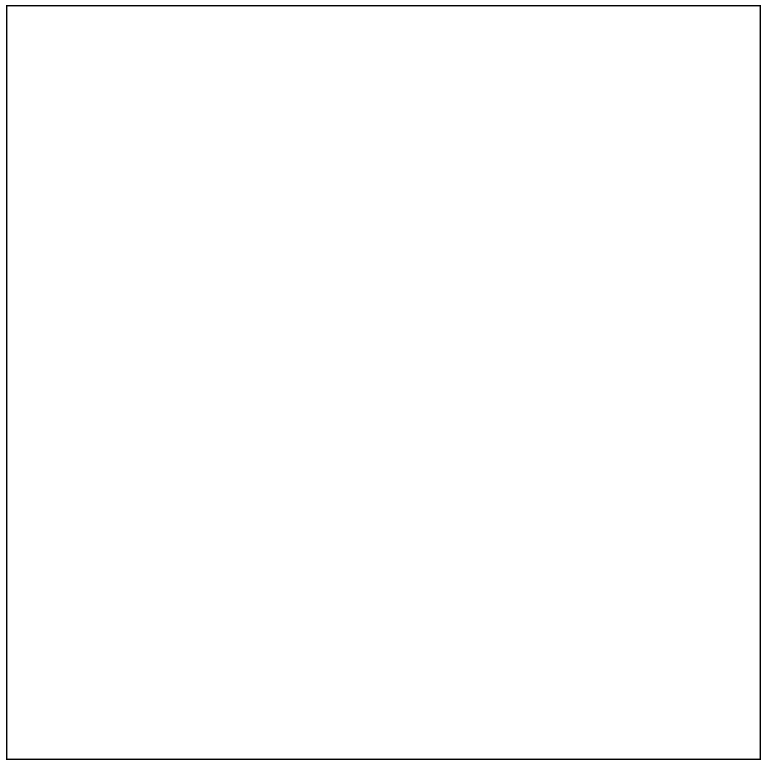

एक दिन, खरगोश नदी किनारे घूम रहा था।

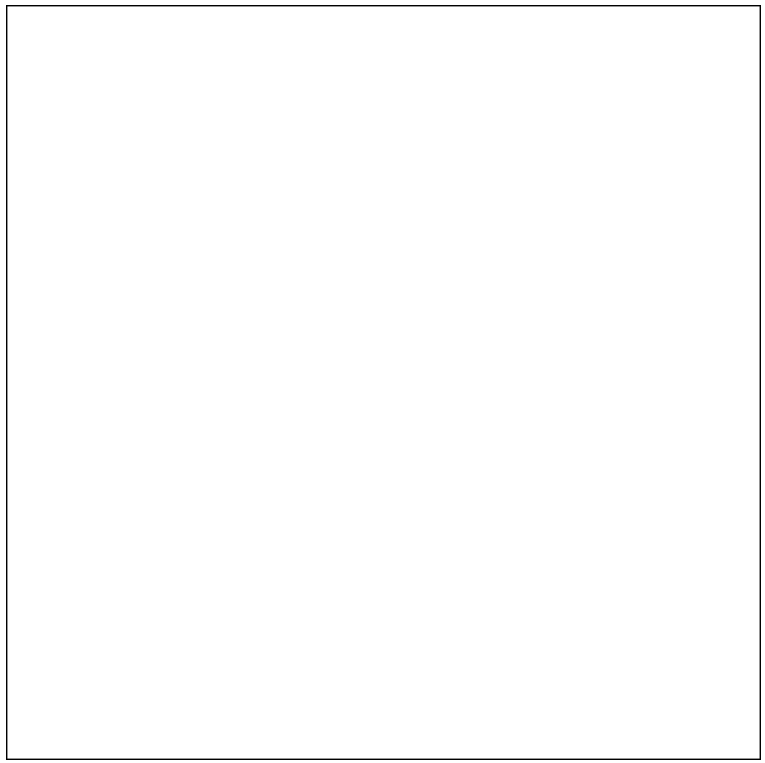

दरियाई घोड़ा भी वहीँ था, वह घूम रहा था और कुछ अच्छी घास खा रहा था।

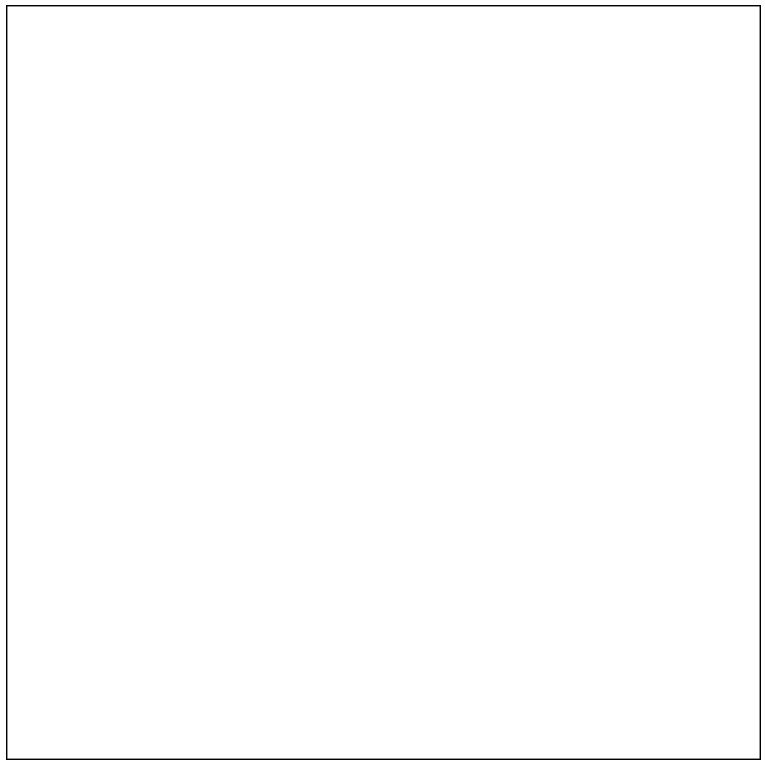

दरियाई घोड़े ने नहीं देखा कि खरगोश भी वहीं है उसने गलती से खरगोश के पैरों पर अपना पैर रख दिया। खरगोश दरियाई घोड़े पर चिल्लाने लगा, “तुम दरियाई घोड़े! तुम देख नहीं सकते कि मेरे पैरों पर अपना पैर रख रहे हो?”

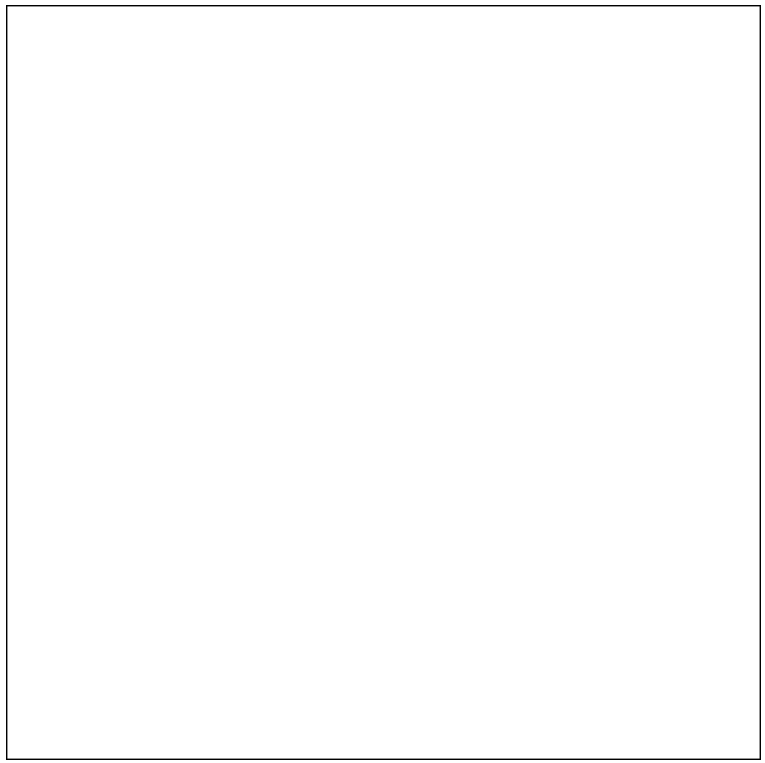

दरियाई घोड़े ने खरगोश से माफ़ी माँगी, “माफ़ करना मुझे। मैंने तुमको नहीं देखा। कृपया मुझे माफ़ कर दो” लेकिन खरगोश ने उसकी बात नहीं सुनी और वह दरियाई घोड़े पर चिल्लाने लगा, “तुमने जान बूझकर किया है! किसी दिन, तुम देखना! तुम्हें भुगतना पड़ेगा”

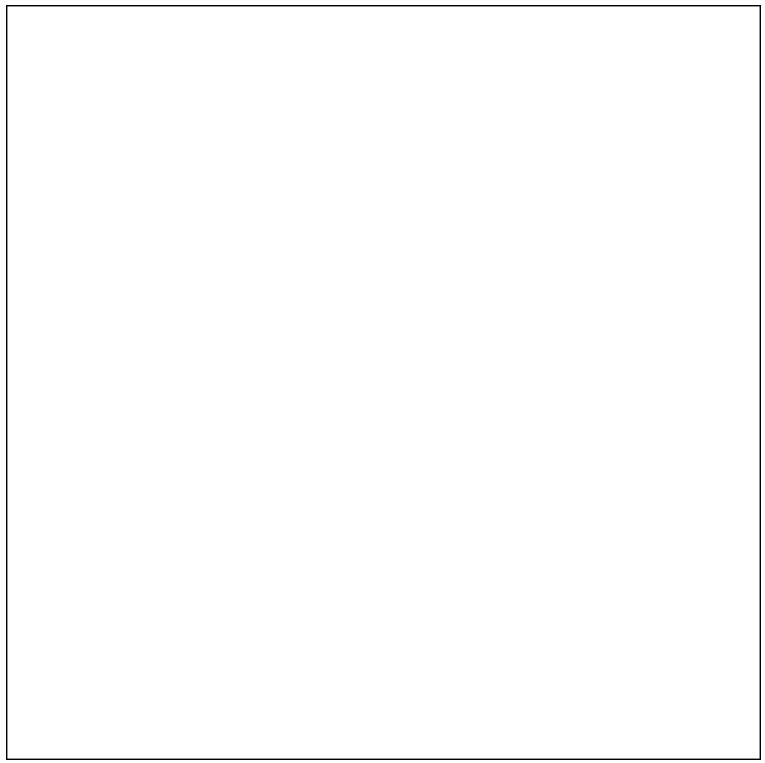

खरगोश मैदान में लगी आग के पास गया और बोला “जाओ, आग! दरियाई घोड़े को जला दो जब वह घास खाने पानी से बाहर आए। उसने मेरे पैरों को कुचला है!” आग ने उत्तर दिया, “कोई समस्या नहीं, खरगोश मेरे दोस्त। मैं वही करूँगी जो तुमने कहा।”

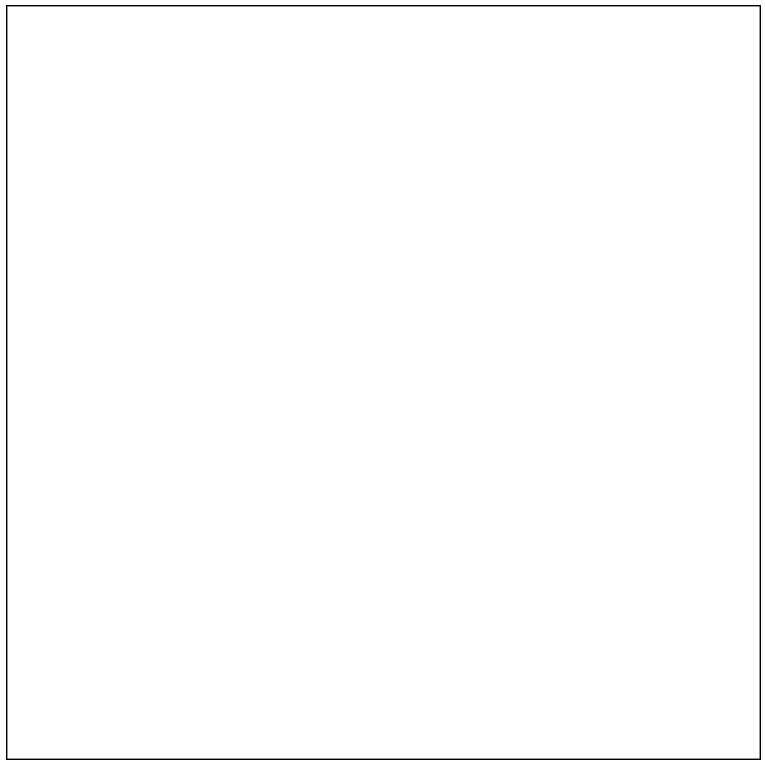

बाद में, दरियाई घोड़ा नदी से दूर घास खा रहा तभी, “बाप रे!” आग की लपटें धधकने लगीं। लपटें दरियाई घोड़े के बाल जलाने लगीं।

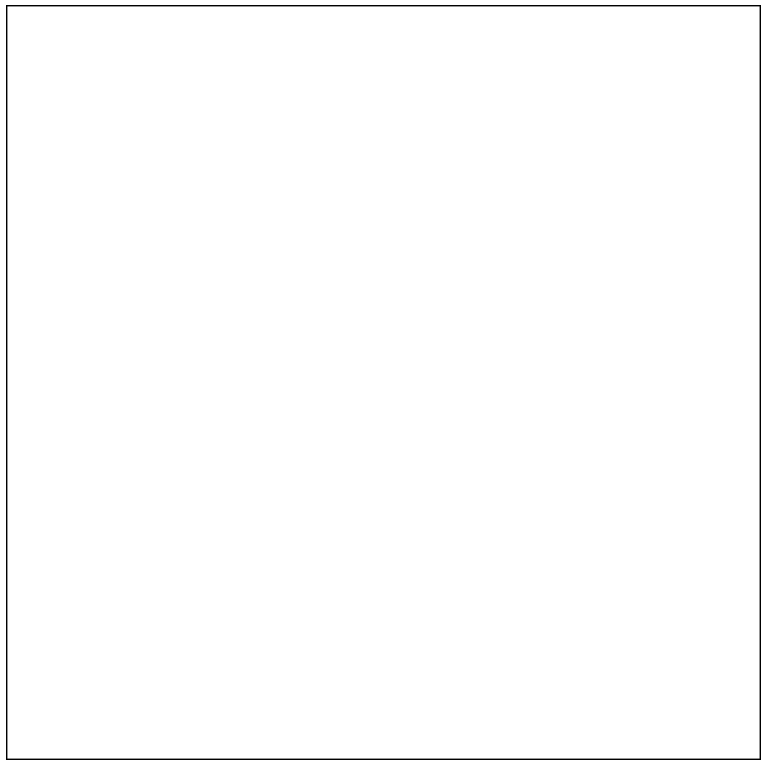

दरियाई घोड़े ने रोना शुरू कर दिया और पानी के लिए दौड़ा। उसके सारे बाल आग से जल गए थे। दरियाई घोड़ा रो रहा था “मेरे बाल आग में जल गए! मेरे सारे बाल चले गए! मेरे सुंदर बाल!”

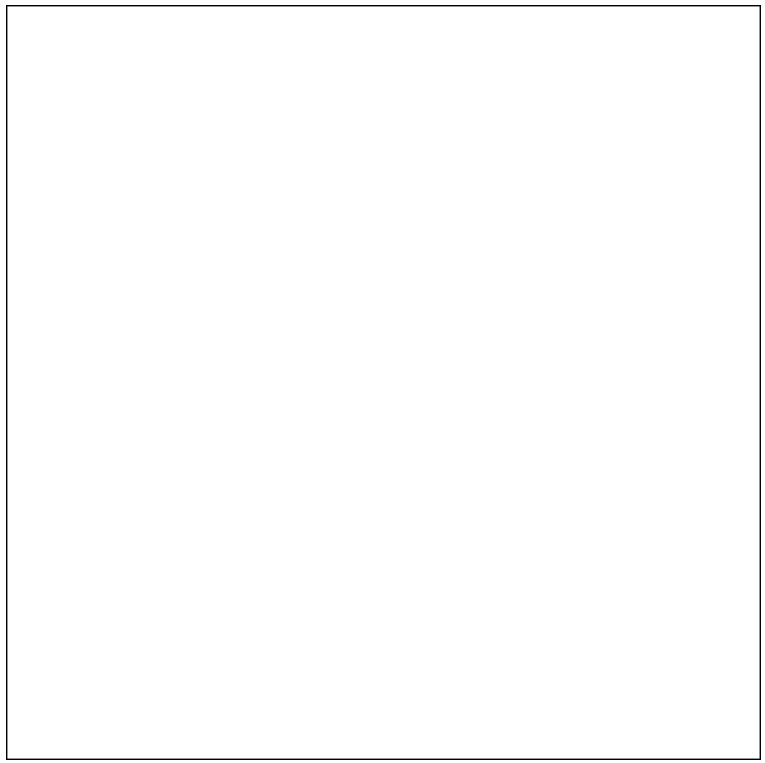

खरगोश खुश था कि दरियाई घोड़े के सारे बाल जल गए। और उस दिन से, आग के डर से, दरियाई घोड़ा पानी से दूर नहीं गया।

香港故事書

global-asp.github.io/storybooks-hongkong

दरियाई घोड़ों के बाल क्यों नहीं होते

Written by: Basilio Gimo, David Ker
Illustrated by: Carol Liddiment
Translated by: Nandani

This story originates from the African Storybook (africanstorybook.org) and is brought to you by 香港故事書 in an effort to provide children's stories in 香港's many languages.

This work is licensed under a Creative Commons Attribution 3.0 International License.